RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 50 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 24 फरवरी , 2019

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 50, 21-24 फरवरी 2019 तदनुसार 12 फाल्गुण, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पारिवारिक समता का साधन

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।।

–अथर्व० ३।३०।४

शब्दार्थ–येन = जिससे **देवाः** = देव, विद्वान्, व्यवहारकुशल जन **न** = नहीं **वि+यन्ति** = वियुक्त होते **च** = और **नो** = न ही **मिथः** = परस्पर **विद्विषते** = अप्रीति करते हैं, वैर करते हैं, **तत्** = उस **संज्ञानम्** = समानता का बोध कराने वाले **ब्रह्म** = ज्ञान को **वः** = तुम्हारे **गृहे** = घर में, हृदय में **पुरुषेभ्यः** = तुम मनुष्यों के लिए **कृण्मः** = हम करते हैं।

व्याख्या–कहावत है **'सौ सियाने एक मत।'** इस कहावत में जो तत्त्व है, वह वेद ने सर्गारम्भ में सुझा दिया–**'येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः'**= जिसके कारण विद्वान परस्पर वियुक्त नहीं होते। [प्रत्युत मिले रहते हैं] और परस्पर द्वेष नहीं करते [प्रत्युत प्रीति करते हैं]। ज्ञान का फल ही ऐसा होना चाहिए। जिस ज्ञान से फूट उत्पन्न हो, विद्वेष बढ़े, वह ज्ञान नहीं, ज्ञानाभास है, उलटा ज्ञान है, मिथ्या ज्ञान है।

प्रीति का प्रमाण मधुर भाषण है, अतः अथर्ववेद [३।३०।३] में आदेश है–**'वाचं वदत भद्रया'** = भली रीति से वाणी बोलो। अन्यत्र [५।७।४] कहा–**'वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु'**= देवों की पुकारों पर मैं प्रीतियुक्त मीठी वाणी बोलता हूँ। **'संज्ञानं ब्रह्म'** एकता का बोध कराने वाला ज्ञान सचमुच मनुष्य को उत्कर्ष के उच्च शिखर पर ले–जाता है। इसके विपरीत वैर–विरोध से मृत्यु प्राप्त होती है। जैसा कि अथर्ववेद [६।३२।३] में कहा है–**'मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्राना उप यन्तु मृत्युम्'** परस्पर घात–पात करने वाले न किसी परिचित को प्राप्त होते हैं और न प्रतिष्ठा को, वरन् मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

प्रतिष्ठा तो तब मिले, जब एक–दूसरे की प्रतिष्ठा करते हों। ये तो एक–दूसरे की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाने का यत्न कर रहे हैं। प्रतिष्ठा मिलेगी तब जब–**'सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनांसि समु व्रता।'** [अथर्व० ६।७४।१]–तुम्हारे शरीर एक–दूसरे के साथ मिले होंगे, जब तुम्हारे मन एक होंगे और होंगे तुम्हारे व्रत=सङ्कल्प, उद्देश्य एक। इसी कारण वेद कहता है–

संज्ञपनं वो मनसोऽथो संज्ञपनं हृदः।
अथो भगस्य यच्छ्रान्तं तेन संज्ञपयामि वः।।

–अथर्व० ६।७४।२

तुम्हारे मनों का संज्ञपन=एकसमान बोधन हो और तुम्हारे हृदयों का एकरस संज्ञपन हो, और भग=ऐश्वर्य–प्राप्ति के लिए जो परिश्रम है, उससे तुम्हें संज्ञानयुक्त करता हूँ। पारिवारिक या राष्ट्रीय सम्पत्ति के लिए सम्मिलित प्रयत्न करने से सफलता मिलती है। संसार में जितना दुःख है, उसका मूलकारण उलटा ज्ञान तथा अज्ञान है। अज्ञान तथा मिथ्या ज्ञान का हान ज्ञान=संज्ञान से होता है, अतः ज्ञान–अर्जन तथा ज्ञान–दान में सदा तत्पर रहना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

स्वामी दयानन्द जी के जन्म दिवस पर नवांशहर में 1 मार्च को अन्तः महाविद्यालय प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में 1 मार्च 2019 को महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का जन्म दिवस वैदिक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान **श्री सुदर्शन शर्मा जी** करेंगे। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें सभा के अधीन चल रहे महाविद्यालयों के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस अवसर पर विजेता टीम को **पंडित हरबंस लाल शर्मा जी स्मृति चिन्ह** के रूप में रनिंग ट्राफी भी प्रदान की जाएगी। इस भाषण प्रतियोगिता में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को 5100 रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी जबकि द्वितीय आने वाले विद्यार्थी को 3100 रुपये और तृतीय स्थान पर आने वाले विद्यार्थी को 2100 रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी।

वर्तमान समय में आर्य समाज की भूमिका

ले. डॉ.-अशोक आर्य कौशाम्बी गाजियाबाद

आर्य समाज एक सामाजिक संगठन है। इसके संस्थापक स्वामी दयानंद जी ने अपने समय की रुढ़ियों, कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध खड़े होकर एक भीषण शंखनाद किया था जिस के परिणाम स्वरूप देश में एक भूचाल सा आया और इस में सब प्रकार की कुरीतियां नष्ट होने लगीं। आज हम देखते हैं कि लोगों में स्वार्थ की भावना फिर से बलवती हो रहीं है। इस कारण जो दुराचार स्वामी जी के काल में हो रहे थे, आज वह उस से भी कहीं अधिक हो रहे हैं। प्रतिदिन कुरीतियाँ, रूढ़ियाँ तथा अंधविश्वास बढ़ते ही जा रहे हैं। इस कारण आर्य समाज और आर्य समाजियों के दायित्व आज बढ़ गए हैं। इस आलोक में आज देखें तो वर्तमान समय में आर्य समाज की भूमिका और भी अधिक बढ़ गई है। आओ इस पर कुछ प्रकाश डालते हुए देखें कि आज आर्य समाज क्या भूमिका वहन करे कि जिस से इन कुरीतियों से निपटा जा सके।

शिक्षा का प्रश्न

स्वामी जी वेद प्रतिपादक शिक्षा के पक्ष में थे जो कि गुरुकुल पद्धति से ही संभव थी किन्तु अंग्रेजों ने अपनी नीति से इस पद्धति का नाश कर स्कूल पद्धति चला दी। परिणाम स्वरूप शिक्षा के वह महान् मापदंड समाप्त हो रहे हैं, जिन्हें स्वामी जी ने लाने का स्वप्न संजोया था। आज की शिक्षा पद्धति के कारण गुरु अध्यापक बन गया है, जिस का समाज में कोई सम्मान नहीं है।

आज के आर्यों का यह दायित्व हो गया है कि इस पद्धति में आमूल परिवर्तन किया जावे। शिक्षा का कार्य आज सरकारों के हाथों में होने से यह सुधार संभव नहीं दिखाई देता किन्तु जो असंभव को संभव बना देवे, उसे ही आर्य कहते हैं। अत: आर्यों का दायित्व है कि हम सब एकजुट हो कर संगठन पद्धति से राज नेताओं का चुनाव करें और उन्हें ही चुनें जो वैदिक सिद्धांतों को वर्त्तमान राजनीति में लाने का कार्य कर सके। इसके साथ ही आज भी आर्य समाज के पास गुरुकुलों की भरमार है। हम अपने दायित्व को समझते हुए गुरुकुलों को पूर्णतया आर्ष पद्धति के साथ चलावें और हमारा दूसरा दायित्व यह है कि हम अपनी संतानों को केवल गुरुकुलों में ही प्रविष्ठ करें। आर्य समाज के बहुत से क्षेत्रों में इस दायित्व को निभाने की चर्चा है और जब यह व्यवहारिक रूप लेगा तो परिणाम उत्तम मिलेंगे।

सहशिक्षा का प्रश्न

वेदादेश को मानते हुए स्वामी जी ने बालक, बालिकाओं के लिए अलग अलग शिक्षा की व्यवस्था पर बल दिया था किन्तु आज सहशिक्षा के कारण समाज का चरित्र ही बिगड़ गया है किन्तु हमारे गुरुकुलों में आज भी सहशिक्षा न हो कर बालक, बालिकाओं की अलग अलग स्थान पर शिक्षा की व्यवस्था है। हम त्यागाभाव से इस पद्धति को मजबूत करें, यह ही हमारा दायित्व है। इसे पूर्ण करने से भी सामाजिक चरित्र ऊँचा उठेगा और जीवन मूल्यों का सम्मान होगा।

राजनीति का प्रश्न: राजनीति समाज के संचालन का एक मुख्य अंग है। आर्यों के भी अनेक सदस्य राजनेता है किन्तु यह दलगत राजनीति के शिकार हो रहे हैं। एक समय था हमारे लाला रामगोपाल शालवाले, पं. शिवकुमार शास्त्री आदि अनेक नेता राजनीति के क्षेत्र में थे। चाहे वह किसी भी दल के रहे किन्तु आर्य समाज को उन्होंने पहले रखा। इस कारण वह आर्यों के लिए बहुत कुछ कर पाए तथा समाज सुधार के अनेक कार्य करने में सफल रहे।

आज भी कुछ आर्य अपना यह दायित्व निभा रहे हैं किन्तु संख्या बल में बहुत कम है। हम जागरूक होकर त्याग भाव से राजनीति में आगे आवें तो हम बहुत कुछ कर सकते हैं। वर्तमान में हमारे कार्यकर्ता राजनीति के प्रभावशाली पदों पर रहते हुए प्रभावशाली कार्य कर रहे हैं। हमारे आर्य जन भी अपना दायित्व निभाते हुए उनको सहयोग दे रहे हैं। कुछ उत्तम परिणाम भी सामने आए हैं किन्तु भविष्य में यह दायित्व प्रमुखता से निभाने के लिए हम अधिक संख्या में राजनीति में जा कर आर्योचित दायित्व की पूर्ति करते हुए समाज में सुधार का कार्य करें।

दलितों का प्रश्न

आर्य समाज की स्थापना के समय भारत में दलितों की बहुत बड़ी समस्या थी, आज कुछ कम है तो भी कहीं कहीं यह समस्या है। हम इस सम्बन्ध में भी अपने दायित्व का निर्वहन करने में लगे हैं। इसे एक आन्दोलन बना कर कार्य करने की आवश्यकता है ताकि इसे जड़ से समाप्त किया जा सके।

शुद्धि आन्दोलन

विधर्मियों के कुचक्र आज भी ज्यों के त्यों ही नहीं उससे भी उग्र बन गए हैं। इसलिए इस दायित्व का निर्वहन करते हुए सब आर्य इस कार्य में जुटें तो निश्चय ही उत्तम परिणाम दिखाई देंगे।

हिंदी का प्रश्न

स्वामी जी हिंदी को प्रमुख स्थान देते थे क्योंकि उनका मानना था कि इस देश में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो देश को संगठन सूत्र में पिरो सकती है। इसके लिए भी स्वामी जी ने खूब सफलता प्राप्त की किन्तु आज हिंदी की दुर्दशा हो रही है।

हिंदी के क्षेत्र में भी आर्य लोग अपने कर्त्तव्यों का खूब निर्वहन कर रहे हैं। इस कारण आज बहुत से लोग इस प्रकार के दिखाई देने लगे है, जो आंग्लभाषा में प्रकाशित निमंत्रण को स्वीकार नहीं करते तथा आज बहुत से लोग फेसबुक, व्हटस एप्प आदि सामाजिक प्रचार क्षेत्र में भी भाषाई दायित्व का निर्वहन करते हुए हिंदी को आगे बढ़ाने तथा इस के प्रयोग पर बल दे रहे हैं। अभी कुछ लोग हैं जो हिंदी का प्रयोग कम करते हैं किन्तु भविष्य उज्जवल है। निकट भविष्य में इन पर अधिकाँश लेखन हिंदी में ही दिखाई देगा। हिंदी के इस प्रचलन से हम संस्कृत के साथ भी जुड़ते चले जा रहे हैं। इससे हमारी महान् संस्कृति की रक्षा हो रहीं है।

माता पिता और गुरुजनों का प्रश्न

बालक को उत्तम संस्कार देने का स्रोत माता, पिता तथा गुरुजन ही होते हैं। हमारी यह प्राचीन परम्परा रही है कि इन सब ने सदा ही अपनी संतानों और शिष्यों को सुचरित्र बनाने के लिए ही उत्तम संस्कार देते हुए इन के जीवन को सोलह संस्कारों में बांधे रखा है। किन्तु आज यह कड़ी टूटती हुई दिखाई दे रही है। आज सोलह संस्कारों के स्थान पर, गर्भाधान, जातकर्म, नामकरण, विवाह तथा अंतिम संस्कार ही बच्चे है। शेष के स्थान पर हम ने प्रति वर्ष जन्म दिन और मृत्यु दिन मनाना आरम्भ कर दिया है। इन संस्कारों के छूटने से भी हमारे समाज का ताना बाना बिगड़ता चला जा रहा है।

आर्य इस क्षेत्र में भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए, अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। आर्य समाज में बहुत से नवयुवक इस प्रकार के आ गए हैं, जो अपने परिवारों में इन सोलह संस्कारों का प्रचलन आरम्भ कर चुके हैं तथा आगे भी लोगों को ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहे है। इस प्रकार सुसंस्कारित संतानों का निर्माण होगा जो अपने कर्त्तव्यों को समझेंगी तथा भविष्य को उज्जवल बनाने में लगेंगी।

इस सब को देखते हुए मैं यह कह सकता हूँ कि वर्त्तमान काल के सामाजिक दायित्वों को वर्तमान आर्यों की युवापीढ़ी निभाने में लगे हुए है किन्तु अभी यह कार्य उस गति से नहीं हो रहा, जिस गति से होना चाहिए। आर्यगण अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए इस कार्य को, इस दायित्व को सम्पन्न करने के लिए पूर्ण रूप से जुट जावें तो परिणाम इस पर उत्तम होंगे। हमारे नवयुवक इस कार्य में लगे हैं। भविष्य उज्जवल है। आशा को बनाए रखें।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस एवं ऋषि बोधोत्सव पर्व धूमधाम के साथ मनाएं

28 फरवरी 2019 को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस एवं 4 मार्च 2019 को ऋषि बोधोत्सव पर्व आ रहे हैं। ये दोनों दिवस आर्य जगत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार के कल्याण के लिए जो कार्य किए हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। 28 फरवरी को सभी आर्य समाजें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस धूमधाम के साथ मनाएं। आर्य जगत् के लिए ये दोनों दिवस किसी त्योहार से कम नहीं हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज के कल्याण के लिए जो कार्य किए हैं, पाखण्ड़ और अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिए जो कार्य किए हैं, इसकी प्रेरणा उन्हें शिवरात्रि के पर्व पर व्रत रखने पर मिली थी। सारी रात जागने पर मूलशंकर ने जब मूर्ति पूजा की नि:सारता को देखा तो उन्होंने सच्चे शिव की खोज करने का संकल्प लिया। उसी के परिणामस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की और राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान की। इसलिए हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि इस दोनों दिवसों को धूमधाम के साथ और उत्साहपूर्वक मनाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस से लेकर शिवरात्रि के पर्व तक अपनी-अपनी आर्य समाजों को दीपमाला के प्रकाश से प्रकाशित करें।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का इस संसार में आगमन भारत के भाग्योदय का कारण बना। अगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस संसार में न आते, शिवरात्रि के पर्व पर उन्हें सच्चे शिव को प्राप्त करने की प्रेरणा न मिलती तथा उस प्रेरणा के फलस्वरूप सच्चे गुरू की खोज के लिए गृह त्याग नहीं करते तो आज राष्ट्र का स्वरूप क्या होता, इसकी कल्पनामात्र करना भी भयावह है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने विचारों को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए आर्य समाज की स्थापना करके एक नए युग का सूत्रपात किया था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समस्त मानव जाति का जो उपकार किया है, उस ऋण को नहीं चुकाया जा सकता। जितना सन्मार्ग महर्षि दयानन्द ने दिखाया है, जितना कुरीतियों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आवाज उठाई है, नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए जितना संघर्ष महर्षि दयानन्द ने किया है उतना किसी अन्य महापुरूष ने नहीं किया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड़, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास के ऊपर जमकर प्रहार किया। राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति पर जोर दिया।

सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने नारी जाति के उद्धार,विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया। इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम भी महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस एवं बोधोत्सव के पर्व पर हम अपने-अपने क्षेत्रों में आर्य समाज के प्रचार की योजनाएं बनाएं। वर्तमान में आर्य समाज के सार्वभौमिक सिद्धान्तों एवं नियमों से लोगों को तथा युवा पीढ़ी को जागरूक करने के अति आवश्यकता है। अगर इस योजना के अनुसार आर्य समाज की कार्य को आगे बढ़ाया जाता है कि हमें महर्षि के ऋण से उऋण होना है तथा समाज का कल्याण करना है तो फिर हमें महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस और बोधोत्सव दोनों ही उत्साहपूर्वक मनाने चाहिए और अधिक से अधिक संख्या में लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ना चाहिए।

आर्य समाज के नियमों को बनाते समय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे पूरा करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने राष्ट्र का नहीं, आर्य समाज का नहीं अपितु संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बताया ताकि हम अपने उद्देश्य से भटक न जाएं। महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम लोगों को आर्य समाज के बारे में जानकारी दें। आर्य समाज के बारे में आम जनता में जो भ्रान्तियां फैल चुकी हैं, उन्हें दूर करने के लिए उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी का यही उद्देश्य था कि समाज में धर्म के नाम पर जो आडम्बर दिखाई दे रहा है, मूर्ति पूजा के कारण जो अन्धविश्वास फैल रहा है, सम्प्रदायवाद के कारण जो लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, उन्हें दूर किया जा सके। सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाकर सभी लोग संगठित होकर विदेशियों की दासता से मुक्त हों।

महर्षि दयानन्द किसी नए पन्थ की मत की स्थापना नहीं करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखते हैं कि- मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आय्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि: है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्था के अधिकारियों से निवेदन है कि वे महर्षि के जन्मदिवस एवं बोधोत्सव पर्व को समारोहपूर्वक मनाएं। अपनी-अपनी संस्थाओं को दीपमाला के साथ सजाएं और इन दोनों दिवसों पर कार्यक्रमों का आयोजन करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्पूर्ण जीवनवृत्त तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों से लोगों को अवगत कराएं। शिवरात्रि के पर्व पर किस प्रकार बालक मूलशंकर के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित हुई, यह हम सभी आर्यों के लिए प्रेरणादायक है। वही पर्व सार्थक होता है जिससे हम कुछ प्रेरणा लेते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को बोध होने के कारण शिवरात्रि का पर्व भी आर्य जगत के लिए बोध पर्व बन गया है। ऐसे पवित्र विचारों के उद्घोषक, तथा प्राणिमात्र का हित चाहने वाले, सारे संसार का भला चाहने वाले, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिवस तथा बोधोत्सव मनाते हुए हमारा लक्ष्य उनके सिद्धान्तों का प्रचार- प्रसार होना चाहिए। अधिक से अधिक जनता को आर्य समाज के साथ जोड़े। वेदों को, सत्यार्थ प्रकाश को तथा महर्षि दयानन्द जी के अन्य ग्रन्थों को पढने की प्रेरणा दें। लोगों में वैदिक साहित्य बांटकर उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

हरणियाँ (आंत उतरना)-१. झाऊ की पत्तियाँ ५ ग्रास को ठन्डाई की भाँति घोंट पीस छान कर पियें। एवं पत्तियों को ही पीस कर गर्म करके सुहाता-२ लेप करें। आँत उतरने की शिकायत दूर होगी।

२. एरन्ड (अण्डी) की जड़ की छाल और सोंठ समभाग लेकर पानी में पीस कर सुहाता-२ लेप करें।

हिष्ट्रिया रोग-

२. प्याज का रस नसिका में २-२ बूंद डालें। प्याज सुघायें।

३. सर्पगन्धा और धनियां १-१ ग्राम काली मिर्च ५ दाने सबको बारीक पीस कपड़ छन कर २ ग्राम मिश्री मिला। एक पुड़िया बना ताजा पानी से फँका दें। इसके सेवन करने से हिस्ट्रिया रोग दूर होता है।

४. योग राज गूगल शहद के साथ चाटें।

५. शरीफा के पत्तों का रस नाक में डालें।

६. दो सन्तरे का रस नित्य प्रात: सायं पिलायें हिष्ट्रिया दूर हो जाता है।

हिचकी आना-१. पीपल की छाल जला कर भस्म बना लें। इसे जल में घोलकर निथरे जल को पिलायें। हिचकी रोग में लाभप्रद है।

२. हल्दी बारीक पीस ४ ग्राम लेकर इसमें पानी का छींटा लगा कर चिलम में रख लें। ऊपर से आग रख लें। तम्बाकू पीने की तरह कश लगायें। २-३ कश लगाते ही हिचकी बन्द हो जायेंगी। (अनुभूत योग है)

३. सोंठ का चूर्ण १ ग्राम मिश्री एक ग्राम दोनों को मिलाकर सूघें।

४. मोर पंख की भस्म बना कर शीशी में रख लें। आधा ग्राम शहद के साथ चटायें।

५. मूली के पत्ते खाने से हिचकियाँ बन्द हो जाती है।

६. ग्वार के पाठे का रस २० ग्राम सोंठ का चूर्ण ३ ग्राम दोनों को मिलाकर पकायें हिचकियाँ बन्द हो जायेंगी।

७. मुलहठी चूर्ण ३ ग्राम शहद ५ ग्राम मिलाकर चाटें।

८. हीरा हींग जरा सी मुनक्का में लपेट गर्म पानी के साथ हिचकी तथा पेट दर्द तुरन्त दूर होगा।

हृदय रोग-१. अर्जुन वृक्ष की छाल का रस ४ किलो गाय का घी १ किलो दोनों को पकायें। जब घी की मात्रा शेष रह जाए तब उतार कर छान लें। शीशी में रख लें। प्रतिदिन १० ग्राम घी को दूध के साथ पियें। हृदय के सभी रोग दूर होते हैं।

२. पीपल की कोंपल का रस ३ ग्राम शहद ५ ग्राम मिलाकर चाटें।

३. कुटकी २ ग्राम, मूलहठी चूर्ण ३ ग्राम दोनों को मिला मिश्री के शर्बत के साथ पियें। शक्ति बढ़ती है।

४. लहसन १ कली प्रात: निराहार खायें।

होठ फटना-नाभि में सरसों का तेल भरकर १ मिनट सीधे सोयें। कभी भी होठ न फटेंगे। नाभि में १ सप्ताह बाद तेल अवश्य डालें।

२. मक्खन में थोड़ा नमक मिलाकर होठों पर मलें।

हैजा-१. ओंघा की जड़ ५ ग्राम सोंफ ५ ग्राम पानी में घोंटकर पिलायें। २-२ घन्टे बाद ३ बार पिलायें। रोग दूर हो जायेगा।

हृदय कम्प-आमला सूखा मिश्री सम भाग पीस छान चूर्ण करके शीशी में रख लें। ताजा जल के साथ प्रयोग करें। श्वेत प्रदर में भी लाभ प्रद है।

हृदय की दुर्बलता-सोंफ का चूर्ण ५ ग्राम शहद ५ ग्राम मिला कर चाटें।

हड़ फूटन-१. आक की जड़ छाया में सुखाकर कूट पीसकर कपड़ छनकर शीशी में रख लें। आधा ग्राम दवा गर्म दूध के साथ लें। इस दवा के प्रयोग से स्त्रियों के मासिक धर्म का खुल कर न आना दर्द से आना, पूरी मात्रा में न आना, मन्दाग्नि नष्ट होकर जठराग्नि तीव्र होती है। वायु गोला, कमर दर्द, हड़ फूटन आदि रोग दूर होते हैं।

श्वास रोग-अदरक का रस ५ ग्राम, काली मिर्च १० नग पीस कर शहद में मिलाकर २-२ घन्टे बाद लें।

सफेद दाग-पंवार की भुजिया बनाकर खायें। और उसे ही पीसकर पानी में घोंट कर लेप करें। (भुजिया का लेप नहीं करें) पंवार के पत्तों को पीस कर लेप करें।

लिकोरिया-पीपल की लाख २० ग्राम. गोखरु २० ग्राम, सफेद चन्दन चूरा २० ग्राम इलायची छोटी १० ग्राम, लोध पठानी २० ग्राम, चिकनी सुपारी २० ग्राम, रुमी मस्तगी, १० ग्राम मिश्री १०० ग्राम, अशोक की छाल ५० ग्राम को कूट छान चूर्ण बनाकर शीशी में रख लें। प्रात: सायं गौ दुग्ध से पियें। पहले चूर्ण फाँक लें। प्रात: सायं गौ दुग्ध से पियें। पहले चूर्ण फाँक लें ऊपर से दूध पी लें। १ माह सेवन करें। ६० खुराक बना लें। (अनुभूत योग है)

लिकोरिया-योनि प्रक्षालन-लाल फिटकरी, अनार फल का छिलका समभाग कूट छानकर चूर्ण कर शीशी में रख लें। १ गिलास पानी में ५ ग्राम चूर्ण डालकर गर्म करें। गुनगुना हो जाये तब कपड़े से छानकर इस पानी में फाया डालकर योनि की धुलाई, सफाई, करें। इससे सुजाक के घाव भी ठीक हो जाता है।

सुजाक-गुड़हल का फूल पहले दिन एक बताशे के साथ दूसरे दिन २ तीसरे दिन ३,४ दिन ४ और पांचवें दिन ५ फिर १ कम करते जाएं। १ फूल खाकर बन्द कर दें।

सुरीली आवाज के लिए-सोंठ कुलिंजन, मिर्च वच, जावित्री और पान।

शहद मिलाकर चाटिए, कण्ठ कोकिला जान।।

काली मिर्च सोंठ कुलिंजन वच जावित्री का चूर्ण शहद के साथ सेवन करे।

सूखा रोग-टमाटर का रस २ चम्मच पिलायें १५ दिन पिलायें।

सन्तान मर जाती हो (बच्चे बचते न हों)-शिवलिंगी के बीज छोटी पीपल तीनों समभाग लेकर बारीक चूर्ण पीस छान कर जल मिला कर गोली बना लें। छाया में सुखाकर शीशी में रख लें। १-१ गोली प्रात: सायं जल के साथ सेवन करें। विशेष लाभ प्रद है।

स्तम्भन शक्ति के लिए-उटंगन के बीज, कोंच के बीज, गोखरु तीनों सम भाग ले कूट छानकर चूर्ण बना शीशी में रख लें प्रात: सायं ५ ग्राम जल के साथ फाकें।

स्वप्न दोष-१. बबूल की पती ५० ग्राम छाया में सुखाकर सम-भाग मिश्री मिलाकर ५ ग्राम प्रात: सायं जल के साथ सेवन करें।

२. आमला मिश्री समभाग ले चूर्ण बना शीशी में रख लें ५ ग्राम प्रात: सायं ठन्डे जल से फाकें। गर्म पदार्थ न खायें तेल, खटाई, मिर्च का प्रयोग न करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें।

शक्ति हीनता के लिए असगन्ध नागौरी १०० ग्राम, विधारा, पुलहठी, शतावर गोखरु, विदारी कन्द, कोंच के बीज शुद्ध किए हुए, ताल मखाना ८ वस्तुएँ सम भाग लें कूट पीस छान कर चूर्ण कर लें वजन ८०० ग्राम कुल यह मिलाकर शीशी में रख लें। फिर अकर करा, जावित्री, दाल चीनी, तेज पात, छोटी इलायची नाग केशर, मूसली, तुलसी के बीज ८ वस्तुऐं सब १०-१० ग्राम लेकर कूट-पीस कर मिला लें। कुछ १६ वस्तुऐं वजन ६५० ग्राम एकत्र कर बोतल में मिलाकर खरल करके रख लें। ५ ग्राम प्रात: सायं गौ दुग्ध या ठन्डे जल से सेवन करें। चेहरा चमक उठेगा। (अनुभूत योग है।) प्रयोग कीजिए ऋषि मुनियों के गीत गाइये।

श्वेत प्रदर-चौलाई की जड़ का चूर्ण चावल के मॉड के साथ दिन में ३ बार खायें। १ सप्ताह प्रयोग करें।

सर्प विष-छोटी हल्दी ५ ग्राम काली मिर्च ५ नग घोंट पीसकर सर्प काटे रोगी को पिला दें। लाभ प्रद है।

संग्रणी (आँव जाना)-चित्रक मूल की छाल, पीपला मूल, जवाखार, सज्जीखार पाँचों नमक, त्रिकुट (सोंठ, काली मिर्च, पीपल) भुनी हींग, अजमोद तथा चव्य। कूटपीस कर चूर्ण बना शीशी में रख अनार या नीबू के रस में घोल कर गोली बना लें। २-२ गोली पानी के साथ लें।

अनेक रोगों की औषधि-तुलसी

बच्चों के पेट में दर्द-तुलसी और अदरक का रस सम भाग गुनगुना २ बार पिलायें।

बच्चों के कान में दर्द-तुलसी के पत्तों का रस गुनगुना करके कानों में डालें।

बच्चों के श्वांस रोग पर-तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर पिलायें।

लू लग जाने पर-तुलसी के पत्तों का रस चीनी में मिलाकर पिलायें।

झमा (चक्कर आना)-तुलसी के पत्तों का रस चीनी में मिलाकर पिलायें।

प्रसव पीड़ा-प्रसव के समय तुलसी के पत्तों का रस पिलायें।

सूत्र दाह-तुलसी की पत्ती चबाने से लाभ होता है।

वमन-तुलसी के पत्तों का रस छोटी इलायची का चूर्ण चीनी में मिलाकर पियें।

दांत दर्द-तुलसी के पत्ते काली

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शान्ति, सौहार्द व निरोग की कामना करता यजुर्वेद

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी कोटा (राजस्थान) 324009

वेदों में प्राणी मात्र के लिए शान्तिमय, सौहार्द पूर्ण तथा निरोगी जीवन की कामना की गई है। कई ऐसे मन्त्र हैं जिनमें कहा गया है कि जो व्यक्ति प्राणी मात्र को अपनी आत्मा स्वरूप देखता है उसको कैसा शोक, कैसा मोह वह तो सब दोषों से परे हो जाता है। यजुर्वेद अध्याय 36 तो इस दृष्टि से सर्वोत्तम विचारों का वाहक है। वास्तव में प्राणी मात्र में एक आत्मा की भावना करना बिना ज्ञान के सम्भव नहीं हैं। ज्ञान के साथ फिर यदि कर्म को संलग्न न किया जावे तो वह ज्ञान भी निरर्थक है। इसी को ध्यान में रखकर अध्याय का प्रारम्भ ही वैदिक ज्ञान के द्वारा स्वस्थ शरीर बनाकर सभी उपद्रवों से दूर रहने को कहा गया है। साथ ही अगले मन्त्र में अन्त:करण की न्यूनता तथा मन की व्याकुलता को दूर करने के लिए सृष्टि के रक्षक परमात्मा से प्रार्थना की गई है। तीसरे मन्त्र में ज्ञान और कर्म की एकता गायत्री मन्त्र के द्वारा बताई गई है। अब हम गायत्री मन्त्र पर तनिक चर्चा कर लें।

ओ३म् भूर्भुव: स्व:। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो न: प्रचोदयात्।।

यजु. 36.03

पदार्थ-(भू:) कर्म काण्ड की व्यवस्था (भुव:) उपासना काण्ड की विद्या और (स्व:) ज्ञान काण्ड की विद्या को संग्रह पूर्वक पढ़कर (य:) जो (न:) हमारी (धिय:) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितु:) समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के (तत्) इन्द्रियों से न ग्रहण किये जाने योग्य (भर्ग:) सब दु:खों के नाशक तेज स्वरूप का (धी महि) ध्यान करें।

मन्त्र में ज्ञान, कर्म और उपासना का समन्वय करके ईश्वर से धारणावती बुद्धि प्राप्त करके सब दु:खों के नाशक परमात्मा की उपासना करने को कहा गया है।

आगे कुछ मन्त्रों में विभिन्न गुणों के स्वामी परमेश्वर से सुख देने की प्रार्थना की गई है। यहाँ पर हम केवल ऐसे तीन मन्त्रों पर विचार करते हैं।

शन्नो वात: पवताꣳशन्नस्तपतु सूर्य्य:।

शन्न: कनिक्रदद्देव: पर्जन्यो अभिवर्षतु।। यजु. 12.01

पदार्थ-जैसे (वात:) पवन (न:) हमारे लिए (शम्) सुखकारी (पवताम्) चले (सूर्य्य:) सूर्य (न:) हमारे लिए (शम्) सुखकारी (तपतु) तवे। (कनिक्रदत्) अत्यन्त शब्द करता हुआ (देव:) विद्युत रूप अग्नि (न:) हमारे लिए (शम्) कल्याणकारी हो और (पर्जन्य:) मेघ हमारे लिए (अभि वर्षतु) सब और से वर्षा करे वैसी शिक्षा ईश्वर हमको देवें। अगले मन्त्र में इस भावना को और विस्तार दिया गया है।

अहानि शं भवन्तु न: शꣳरात्री: प्रति धीयताम्।

शन्न इन्द्राग्निीन भवताम-वोभि: शन्न इन्द्रा वरूणा रातहव्या।

शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिद्रासोमा सुविताय शंयो:।।

यजु. 36.11

पदार्थ-हे परमेश्वर। जैसे (अवोभि:) रक्षा आदि के साथ (शंयो:) सुख की (सुविताय) प्रेरणा के लिए (न:) हमारे अर्थ (अहानि) दिन (शम्) सुखकारी (भवन्तु) होवें। (रात्री:) राते (शम्) कल्याण के (प्रति) लिए (धीयताम्) हमको धारण करें (इन्द्राग्नी) विद्युत और प्रत्यक्ष अग्नि (न:) हमारे लिए (शम्) सुखकारी होवें और (इन्द्रासोमा) विद्युत और औषधियां (शम्) सुखकारी होवें ऐसी शिक्षा हमें दीजिए। और निम्न मन्त्र तो संसार भर में शान्ति देने वाला बन गया है-

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्ति पृथिवी शान्तिरापा: शान्तिरोषधय: शान्ति।

वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्मशान्ति: सर्वꣳशान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि।।

यजुर्वेद मन्त्र 36.17

पदार्थ-हे मनुष्यों। जो (द्यौ: शान्ति) द्युलोक शान्ति दायक हों (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्ष (शान्ति:) शान्तिदायक (पृथिवी) भूमि (शान्ति:) सुखकारी उपद्रव रहित (आप:) जल (शान्ति:) शान्तिदायक (ओषधय:) सोमलता आदि औषधियां (शान्ति:) शान्तिदायक (वनस्पतय:) पेड़ पौधे (शान्ति:) शान्तिदायक (विश्वे देवा:) सब विद्वान् लोग (शान्ति:) उपद्रव निवारक (ब्रह्म) परमेश्वर अथवा वेद (शान्ति:) सुखदायक (सर्वम्) सम्पूर्ण जगत् मात्र (शान्ति:) शान्तिदायक (शान्ति: एव) शान्ति भी (शान्ति:) सुखदायक (सा) वही (शान्ति:) सुखदायक (मा) मेरे लिए (शान्ति: एधि) सुखदायक प्राप्त होवें।

फिर प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि देखने के लिए कहा गया है-

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

यजु. 36.18.

पदार्थ-संसार भर के सभी प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और मैं भी संसार के समस्त प्राणियों को मित्रता की दृष्टि से देखूं। इस प्रकार संसार के सभी प्राणी हम एक दूसरे को सम्यक् मित्र की दृष्टि से देखें। हे भगवान्। हमें ऐसा दृढ़ बना दीजिए।

विश्व के किसी भी अन्य ग्रन्थ में ऐसी श्रेष्ठ भावना का विचार नहीं पाया जाता है।

वेदानुयायी तो परमात्मा के श्रेष्ठ गुणों को अपने में धारण करना चाहता है। वह ऐसा बना देने की केवल प्रार्थना ही नहीं करता वरन् उसे कार्य रूप देने का प्रयत्न भी करता है, पुरूषार्थ भी करता है।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽ-अस्त्वर्चिषे।

अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव।।

यजु. 36.20

पदार्थ-हे भगवान्। (हरसे) पाप हरने वाले (शोचिषे) प्रकाशक (ते) आपके लिए (नम:) नमस्कार तथा (अर्चिषे) स्तुति के योग्य (ते) आपके लिए (नम:) नमस्कार (अस्तु) प्राप्त होवें। (ते) आपकी (हेतय:) अमिट व्यवस्था (अस्मत्) हमसे (अन्यान्) भिन्न अन्यायी शत्रुओं को (तपन्तु) दु:ख देवे। आप (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (पावक:) पवित्र कर्ता (शिव:) कल्याणकारी (भव) हूजिए।

भावार्थ-हम लोग आपके शुभ गुण, कर्म और स्वभावों के समान अपने गुण, कर्म और स्वभाव के लिए आपको नमस्कार करते हैं। आपकी न्यायकारी व्यवस्था में दुष्ट, अधर्मियों को कठोर दण्ड मिले। हमारे लिए तो आप पवित्र कर्ता व कल्याणकारी बने रहें। परमात्मा चूंकि सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है तथा भक्तों की प्रार्थनाओं को सुनता भी है और सहायता भी करता है अत: उससे प्रार्थना करते हैं कि वह दुष्टों से हमारी रक्षा करें।

यतोयत: समीहसे ततो नो अभयं कुरू।

शं न: कुरू प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य:।। यजु. 36.22

पदार्थ-हे भगवान। आप अपने कृपा कटाक्ष से (यतोयत:) जिस जिस स्थान से (समीहसे) सम्यक् चेष्टा करते हो (तत:) उस उस से (न:) हमको (अभयम्) भयरहित (कुरू) करो। (न:) हमारी (प्रजाभ्य:) प्रजाओं से और (न:) हमारे (पशुभ्य:) गौ आदि पशुओं से (शम्) सुख और (अभयम्) निर्भय (कुरू) कीजिए। अगले मन्त्र में उल्लेख है कि सभी पदार्थ हमारे लिए हितकारी बनें।

सुमित्रियान आप ओषधय: सन्तु दुर्मि त्रियास्तस्मै सन्तु।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म:।। यजु. 36.23

पदार्थ-हे मनुष्यों। जो ये (आप:) जल (ओषधय:) यवादि औषधियां (न:) हमारे लिए (सुमित्रिया) अच्छे मित्र के समान (सन्तु) होवें वे ही (य:) जो अधर्मी (अस्मान्) हमसे (द्वेष्टि) द्वेष करें (च) और (यम्) जिससे (वयम्) हम लोग (द्विष्म:) द्वेष करें (तस्मै) उसके लिए (दुर्मित्रिया:) शत्रु के लिए विरूद्ध (सन्तु) होवें।

अध्याय के अन्तिम मन्त्र में सौ वर्ष या उससे भी अधिक समय तक नीरोग रह कर जीवित रहने की कामना की गई है।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छु-क्रमुच्चरत्।

पश्येम शरद: शतं जीवेम शरद:

(शेष पृष्ठ 7 पर)

परमात्मा का स्वरूप

ले.-डॉ. सुशील वर्मा, फाजिल्का

(गतांक से आगे)

8. कवि-अर्थात वह सर्वज्ञ है। सब कुछ जानता है। संसार की रचना ही उसकी कविता है। ''विष्णो: कर्मानि पश्यत''-यहाँ 'पश्यत' का अर्थ है 'दर्शन' और 'दर्शन' का अर्थ है-सम्यक ज्ञान की प्राप्ति इसी मन्त्रांश में आगे है ''यत: व्रतानि पस्पशे'' अर्थात् जिनकी सहायता से उस विष्णु (परमात्मा) के उन कर्मों के सम्यक ज्ञान की सहायता से 'व्रतानि पस्पशे'-मनुष्य अपने व्रतों का अनुष्ठान कर सके। और व्रत का अर्थ है कर्त्तव्य पालन। कहने का तात्पर्य यह कि परमात्मा सर्वज्ञ है उसके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को अपने जीवन में कर्त्तव्य पालन करते हुए अपना जीवन यापन करें। ''नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय'' परमपद प्राप्ति का दूसरा कोई मार्ग नहीं है। उसी के कर्मों को देखो, ज्ञान की प्राप्ति करो और तदनुसार कर्म करो, अकर्म नहीं।

9. मनीषी-ईश्वर के मनीषी गुण को समझना केवल मानव की क्षमता है क्योंकि उसकी यथार्थता को समझने के लिए मनुष्य को मनीषी अथवा विचारशील होने की आवश्यकता है। वह परमात्मा ही हम मानवों को मननशील होने का गुण प्रदान करता है क्योंकि सबसे बड़ा गुरु तो वही है जो हमें वेद का ज्ञान प्रदत्त करता हुआ हम पर उपकार कर रहा है ''स पूर्वेषाम् गुरु:''

10. परिभू:-वह सब जगत को चारों ओर से घेरे हुए है। भीतर भी बाहर भी।

''तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यत:''

यजु 40/5

वह सभी जगह है, सब चर अचर में है, भीतर बाहर सब ओर व्यापक है इसीलिए उसे 'विष्णु' के नाम से पुकारा जाता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में यही भाव लिया है।

''वेरेष्टि व्याप्नोति स्वयंभू-अर्थात् उसका कोई दूसरा उत्पादक नहीं है। क्योंकि जो नित्य सत् है उसका कोई दूसरा कारण नहीं होता-''सदकारण-वन्नित्यम्''-वैशे. 4।1।

इस ईश्वर का कोई दूसरा मालिक नहीं। वह स्वयं अपने आप ही मालिक है। मूल का मूल नहीं होता है-''मूले मूलाभावादमूलं मूलम्'' सांख्य 1।67

आर्य समाज के पहले नियम में उसे आदि मूल कहा गया है। वह स्वयंभू है वह खुदा है-खुद+आ। खुद=स्वयं, आ-आका, मालिक।

12. शाश्वतीभ्य: समाभ्य:-शाश्वतीभ्य:-सदा रहने वाली, नित्य

समाभ्य:-समा अर्थात् ईश्वर की जीव रूपी प्रजा

यहाँ तात्पर्य है कि ईश्वर ने सृटि रचकर नित्य और अनन्तसंख्यक जीवों के लिए।

13. याथातथ्यतोऽर्थान व्यद-धात्अर्थान्-पदार्थो का, याथातथ्यत:-ठीक ठीक रीति से, वि-अदधात्-विधान बनाया है।

सब पदार्थो का ठीक ठीक रीति से, विधान बनाया है।

समस्त जीवजन्तु व प्राणी उस की प्रजा है। शाश्वती प्रजा, जो नित्य है उसी प्रजा के लिए इस सृष्टि की रचना उस परमपिता परमात्मा ने की।

तात्पर्य यह कि परमपिता परमात्मा ने सब पदार्थों का अपनी प्रजा अर्थात् सभी जीव जन्तु व प्राणियों के लिए उस ने ठीक ठीक रीति से अर्थात् जैसा करोगे, वैसा भरोगे के नियमानुसार इस संसार की रचना का विधान बनाया है।

यह है परमात्मा का वास्तविक रूप, और हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस परमपिता की सत्ता को स्वीकार करते हुए उसकी उपासना करें। जैसा रूप यहाँ वर्णित है उसी परमसन्ता के स्वरूप को हृदयगंम करते हुए केवल मात्र उसी की उपासना करें अन्य की नहीं।

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का नवम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से सहृदयी दानदाता महानुभावों के सहयोग व गुरुकुल हितैषी दिव्यात्माओं के परोक्ष-प्रत्यक्ष उपस्थिति में गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि. नुआपड़ा ओड़िशा का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 26,27,28 जनवरी 2019 को अनेक प्रेरक कार्यक्रमों के साथ गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य जी के सान्निध्य में गुरुकुल के आचार्य, उपाचार्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

गुरुकल के विशिष्ट सहयोगी दिल्ली से पधारे आर्यजनों के शुभकरकमलों से ओ३म् ध्वजा एवं श्री बसन्त कुमार पण्डा राज्य भाजपा प्रदेश अध्यक्ष तथा श्री सोमनाथ पात्र के शुभकरकमलों से तिरंगा पताका उत्तोलन के साथ त्रिदिवसीय महोत्सव का शुभारम्भ हुआ।

महोत्सवीय अवसर पर लगभग सौ साधु-सन्तों का शॉल एवं नकद राशि से सम्मान, विधवा, दिव्यांग, अनाथों को साड़ी, शॉल एवं कम्बल वितरण, छ: आदर्श गृहस्थी वानप्रस्थ दीक्षा से दीक्षित एवं पचास के लगभग श्रद्धालु महानुभाव यज्ञोपवीत धारण किये, पूज्य विद्वानों के द्वारा राष्ट्रोन्नति एवं आध्यात्मिक विषयक प्रवचन, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा बौद्धिक एवं शारीरिक प्रतिभा प्रदर्शन जिसमें 19 ब्रह्मचारी अष्टाध्यायी, धातुपाठ, लिंगानुशासन, उणादिकोष, पारिभाषिक, गणपाठ, निघण्टु, मीमांसा अतिरिक्त पांच दर्शन, छन्द: शास्त्र, काव्यालंकार, वर्णोच्चारण शिक्षा, आर्योद्देश्य रत्नमाला, ईशोपनिषद्, पुरूष सूक्त इन ऋषिकृत ग्रन्थों को आद्योपान्त सुनाये तथा नाटिका, गीतिका, नाटय गीतिका, कबाली एवं विविध शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम ब्रह्मचारियों के द्वारा प्रदर्शन किया गया।

नवम वार्षिक महोत्सव की सबसे बड़ी उपलब्धि अनेक आदर्श परिवार दैनिक अग्निहोत्र करने का संकल्प लिये एवं ब्रह्मचारियों के द्वारा बलि प्रथा व मूर्ति पूजा से हानि गीतिका व नाटिका प्रस्तुति से प्रभावित होकर अनेक सज्जन मूर्ति पूजा नहीं करने का व्रत लेकर यज्ञोपवीत धारण किये।

गुरुकुल के संरक्षक श्री खुशहालचन्द्र जी आर्य कोलकाता की अध्यक्षता में एवं श्री सुरेन्द्र कुमार जी बुद्धिराजा, श्री वेदप्रकाश जी मिगलानी के मुख्यातिथ्य में गुरुकुल सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

महोत्सव में पधारे ओड़िशा के बीस जिलों से व भारत के छ.ग. झारखण्ड, म.प्र.आ.प्र. दिल्ली, राजस्थान, कोलकाता, गुजरात आदि प्रदेशों के सहस्राधिक श्रद्धालु महानुभावों को आशीर्वचन एवं मार्गदर्शन हेतु स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, गुजरात, पूज्य डॉ. देवव्रत आचार्य जी, आचार्य ब्रह्मदत्त जी कोलकाता, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती, ओड़िशा, ब्र. श्यामानन्द आर्य भजनोपदेशक कोलकाता उपस्थित थे।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। पुरोहित महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित संस्कारविधि के अनुसार सभी वैदिक संस्कारों की योग्यता रखता हो। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। आवास की नि:शुल्क व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की जाएगी।

सम्पर्क करें-: संजीव कुमार चड्ढा-9463580806

पृष्ठ 8 का शेष-वार्षिक उत्सव सम्पन्न

श्री कमल किशोर आर्य ने आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलने का आहवान किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि हमें मिलकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने का कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करते हुए वेदों पर आधारित जो सिद्धान्त दिए हैं और आर्य समाज के दस नियमों की रचना की है, उनके द्वारा ही विश्व में शान्ति को स्थापित किया जा सकता है। कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के मन्त्री श्री निर्मल आर्य जी ने सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया। इस अवसर कार्यक्रम में सहयोग देने वाले परिवारों तथा गणमान्य अतिथियों को सम्मानित किया गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा सभी आर्यजनों से ऋषि लंगर ग्रहण किया। इस अवसर पर जालन्धर की सभी आर्य समाजों के अधिकारी, सदस्य एवं आर्यजन उपस्थित थे।

निर्मल आर्य मन्त्री आर्य समाज बस्ती बावा खेल जालन्धर

पृष्ठ 5 का शेष-शान्ति, सोहार्द व निरोग...

शतं श्रृणुयाम शरद: शतं प्र ब्रवाम शरद: शतमदीना: स्याम शरद:
शतं भूयश्च शरद: शतात्।।
यजु. 36.24

पदार्थ-हे परमेश्वर। आप जो (देवहितम्) विद्वानों के लिए हितकारी (शुक्रम्) शुद्ध (चक्षु:) नेत्र के तुल्य सब के दिखाने वाले (पुरस्तात्) अनादि काल से (उत् चरत्) उत्कृष्टता के साथ सबके ज्ञाता हैं। (तत्) उस चेतन ब्रह्म आप को (शतम् शरद:) सौ वर्ष तक (पश्येम) देखें (शतम् शरद:) सौ वर्ष तक (जीवेम) जीवित रहें (शतम् शरद:) सौ वर्ष पर्यन्त (श्रृणुयाम) शास्त्रों अथवा मंगल वचनों को सुनते रहें (शतम् शरद:) सौ वर्ष पर्यन्त (प्र ब्रवाम) पढ़ावे अथवा उपदेश करें (शतम् शरद:) सौ वर्ष पर्यन्त (श्रृणुयाम) शास्त्रों अथवा मंगल वचनों को सुनते रहें (शतम् शरद:) सौ वर्ष पर्यन्त (प्र ब्रवाम) पढ़ावे अथवा उपदेश करें (शतम् शरद:) सौ वर्ष तक (अदीना:) दीनता रहित (स्याम) होवें। (च) और (शतम् शरद:) सौ वर्ष से (भूय:) अधिक भी देखें, सुने, बोलें और जीवें।

पृष्ठ 4 का शेष-घरेलू उपचार

मिर्च पीसकर गोली बनाकर दांत के नीचे रखें।

पेद दर्द-तुलसी व अदरक का रस गर्म करके पियें।

घाव पर-तुलसी के पत्ते पीसकर घाव पर बाधें।

खाँसी-तुलसी की मंजरी का चूर्ण शहद के साथ सेवन करें।

रतौंधी-तुलसी के पत्तों का रस कई बार एक-एक बूँद आँखों में डालें।

दाद-तुलसी के पत्ते दाद वाले स्थान पर मलें।

सिर दर्द-तुलसी रस, नींबू रस समान मात्रा में मिलाकर पियें।

पाचन शक्ति के लिए-भोजनोपरान्त तुलसी के ५ पत्ते सेवन करें।

कण्ठ रोग-तुलसी रस शहद मिलाकर चाटें।

सूजन पर-जिस स्थान पर सूजन हो शरीर के उसी स्थान पर तुलसी का लेप करें।

ज्वर-तुलसी के पत्ते, काली मिर्च पीस कर गुन गुने जल में मिला कर पियें।

कान के कीड़े-वन तुलसी के पत्तों का रस कान में डालें।

तुलसी चाय-तुलसी पत्र सूखे छाया में सुखा कर रख लें। ५०० ग्राम दाल चीनी ५० तेज पात १०० ग्राम ब्राह्मी, वनपशा २५ ग्राम, सोंफ २५० ग्राम, छोटी इलायची के दाने १५० ग्राम लाल चन्दन २५० ग्राम, काली मिर्च २५ ग्राम कूट पीस छान कर तुलसी पत्र का चूर्ण मिलाकर चाय की पत्ती की तरह गर्म खौलते पानी में पकायें। दूध न डालें। यह शरीर के लिए विशेष लाभ प्रद है। बच्चे स्त्रियां बुढ़े सभी के लिए लाभदायक है।

श्रद्धांजलि सभा

आर्य समाज, आर्य समाज चौंक बठिंडा की कार्यकारिणी की ओर से आर्य समाज के प्रांगण में एक शोक सभा रखी गई जिसमें जम्मू कश्मीर के पुलवामा में सी.आर.पी.एफ के 40 जवानों पर आतंकवादी हमले के दौरान शहीद हुये जवानों को श्रद्धांजलि दी गई। श्रद्धांजलि के दौरान मौन रख कर परमपिता परमात्मा से शहीदों के प्रति आत्मिक शान्ति की प्रार्थना की गई और उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की गई। इस मौके पर आर्य समाज के महामंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र बंसल, उप प्रधान श्री गौरी शंकर, रमेश गर्ग, विनोद गर्ग, अशोक गर्ग, जनेश सिंगला एवं बृज मेहता आदि उपस्थित थे।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज पं. लेखराम स्मारक कादियां के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। पुरोहित महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित संस्कारविधि के अनुसार सभी वैदिक संस्कारों की योग्यता रखता हो। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। आवास की नि:शुल्क व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की जाएगी।

सम्पर्क करें-: रमेश भण्ड़ारी -9814262574

प्रवेश सूचना

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर
सम्बद्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
सत्र- 2019-20
कक्षा 6वी, 7वीं, 8वीं, 9वीं, 11वीं और बी.ए.प्रथम वर्ष
प्रवेश परीक्षा- 7 अप्रैल 2029 प्रात: 10.00 बजे

विशेष:-आधुनिक विषयों के साथ साथ संस्कृत को मुख्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

1.सम्पूर्ण नि:शुल्क शिक्षा (आवास-पाठन-भोजन)
2.सम्पूर्ण संस्कृतमय वातावरण।
3.अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर को पढ़ाने की विशेष सुविधा।
4.समय-समय पर आर्य विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान।
5.मल्टीमीडिया एवं पुस्तकालय की विशेष सुविधा।
6.नियमावली प्राप्त करने की तिथि 1 मार्च 2019 से 6 अप्रैल 2019 तक।

आवश्यक दस्तावेज: आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र, आयु प्रमाण पत्र, स्वास्थ्य प्रमाण पत्र।

परीक्षा उपरान्त: गत परीक्षा का प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, पासपोर्ट आकार के चार छायाचित्र।

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय: 0181-2782252-49 आचार्य:98030-43271
व्हाट्सएप्प: 099881-63239 अधिष्ठाता 098887-64311
E-mail-gurukulkartarpur@gmail.com
Website-www.gurukulkartarpur.com

गुरुकुल शिल्प विद्यालय बठिंडा में 26 जनवरी मनाई गई

गुरुकुल शिल्प विद्यालय गुरुकुल रोड बठिंडा में 26 जनवरी बहुत ही धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री अश्विनी मोंगा जी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। आर्य समाज बठिंडा के महामंत्री श्री सुरेन्द्र गर्ग जी द्वारा स्टेज का संचालन करते हुये गणतंत्र दिवस के बारे में विस्तार से बताया गया। इससे पहले मकर संक्रान्ति के अवसर पर हवन यज्ञ करने के पश्चात गुरुकुल शिल्प विद्यालय में ऋषि लंगर लगाया गया जिसमें सैंकड़ों की संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस मौके पर गुरुकुल के प्रधान श्री धर्मपाल रल्हन, महामंत्री श्री अशोक गर्ग, उप प्रधान श्री देवेन्द्र बंसल जी के अलावा श्री अनिल अग्रवाल, श्री प्रदीप कुमार, श्री रविन्द्र पुरी एवं सभी गुरुकुल के सदस्य और आर्य समाज के अधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। उप प्रधान श्री देवेन्द्र बंसल जीद्वारा आए हुये लोगों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर आसपास के भी कई महानुभाव उपस्थित थे।

साप्ताहिक सत्संग में शहीदों को श्रद्धाजंलि दी

आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर में साप्ताहिक हवन यज्ञ एवं सत्संग किया गया। यज्ञ के यजमान श्री सत्यपाल आर्य तथा श्री भारत भूषण अपने परिवार सहित यज्ञ में उपस्थित थे। यज्ञ का पं. प्रिंस द्वारा सम्पन्न करवाया गया। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के प्रधानश्री राजपाल जी ने पुलवामा में आंतकी हमले में शहीद हुए भारतीय वीरों को श्रद्धांजलि दी तथा परमात्मा से उनकी आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। सभी आर्य बन्धुओं ने इस घटना पर दु:ख प्रकट करते हुए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धाजंलि अर्पित की।

राजपाल प्रधान
आर्य समाज गांधी नगर

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर का माघ मास का गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में माघ मास में चलने वाले गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति में 31 हवनकुंडों में आहूतियां प्रदान करती हुई माताएं। चित्र दो में सोंधी परिवार को सम्मानित करती हुई स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी एवं अन्य सदस्य।

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में माघ महीने में चलने वाला गायत्री महायज्ञ दिनांक 13 फरवरी 2019 बुधवार को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। 14 जनवरी मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ होकर यह गायत्री महायज्ञ बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ एक महीने चला और इस महायज्ञ में बहनों तथा भाईयों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। प्रतिदिन कॉफी संख्या में लोगों ने यजमान बनकर उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। लगातार एक महीने तक बाहर से आए विद्वानों के प्रवचन होते रहे। इस कार्यक्रम की यह विशेषता है कि बाहर से भजनोपदेशकों को नहीं बुलाया जाता और स्त्री समाज की बहनों के द्वारा भजन गाए जाते हैं। इस वर्ष 14 से 20 जनवरी तक स्वामी विष्वङ्ग जी अजमेर, 21 से 25 जनवरी तक आचार्य सोमदेव जी अजमेर, 26 जनवरी से 31 जनवरी तक आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद, 1 फरवरी से 6 फरवरी तक आचार्य राजू वैज्ञानिक जी दिल्ली तथा 7 फरवरी से 13 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माता सत्याप्रिया जी सुन्दरनगर वालों के प्रवचन होते रहे। सभी विद्वानों ने गायत्री महामन्त्र, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, मर्यादापुरूषोत्तम राम, योगीराज श्रीकृष्ण, महाभारत, रामायण एवं वेदों के ऊपर चर्चा करते हुए सभी को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी की अध्यक्षता में चलता रहा जिसमें सभी बहनों ने अपना तन-मन और धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

दिनांक 13 फरवरी 2019 बुधवार को माघ मास में चलने वाले इस गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति 31 हवनकुण्ड़ों पर की गई। पूरे मास के हवन यज्ञ में जिन्होंने यजमान बनकर आहुतियां डाली थीं, आज उन्होंने अपने परिवार सहित पूर्णाहुति ड़ालकर यज्ञ सम्पन्न किया। निरन्तर एक महीने तक चलने वाले इस यज्ञ में 200 से ज्यादा परिवारों ने यजमान पद को ग्रहण किया। पूर्णाहुति के अवसर पर श्रीमती गुलशन शर्मा, श्रीमती सुशीला भगत, संगीता भगत, नीरू कपूर, श्रीमती रजनी सेठी मुख्य यजमान बनें। गायत्री महायज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री जी थे। यज्ञ के पश्चात विद्वानों ने यजमान परिवारों को आशीर्वाद प्रदान किया।

पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य समाज के सत्संग हाल में शुरू हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माता बिमला मित्तल जी धर्मपत्नी स्व. श्री चतुर्भुज मित्तल ने की तथा श्री आलोक सोंधी मैनेजिंग डायरैक्टर पी. के. एफ. ने मुख्य अतिथि के पद को सुशोभित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए माता सत्याप्रिया जी ने प्रभु भक्ति के मधुर भजन गाकर ईश्वर की महिमा का गुणगान किया। महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज ने सभी को स्वामी दयानन्द के दिखाए मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा दी। उन्होनें कहा कि श्रेष्ठ कर्म करने के लिए जप, यज्ञ, साधना और ईश्वर की उपासना करना आर्यों का कर्त्तव्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गायत्री वेदमाता सार्वभौमिक है और गायत्री की उपासना करने से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निखार होता है। श्रीमती नीरू कपूर जी संयुक्त मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज ने स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई जिससे लोग बहुत प्रभावित हुए और स्त्री आर्य समाज के द्वारा किए जाए रहे समाजसेवा के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्रीमती नीरू कपूर ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मंच का संचालन किया। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की ओर से प्रिंसिपल श्री विनोद चुघ, दमयन्ती सेठी, अजय महाजन, शशि मैहता, सुशील खरबन्दा, राजेन्द्र विज, डॉ. सुषमा चोपड़ा, डॉ. सुषमा चावला अन्य सभी गणमान्य अतिथियों को बुके और महर्षि दयानन्द का चित्र देकर सम्मानित किया। स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी ने महात्मा चैतन्यमुनि, माता सत्यप्रिया तथा आए हुए सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सभी के सहयोग से इस वर्ष का यह गायत्री महायज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। आप सभी के द्वारा तन-मन-धन से दिए गए सहयोग के कारण ही स्त्री आर्य समाज दिन-दुगुनी, रात-चौगुनी उन्नति कर रही है। आप सभी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ। इस अवसर पर आर्य समाज मॉडल टाऊन के मन्त्री श्री अजय महाजन, श्रीमती राजमोहिनी सोंधी, श्रीमती ज्योति शर्मा, श्रीमती गुलशन शर्मा, डॉ. सुषमा चोपड़ा तथा बहुत से गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। सारा सत्संग हाल खचाखच भरा हुआ था।

नीरू कपूर संयुक्त मन्त्राणी
स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

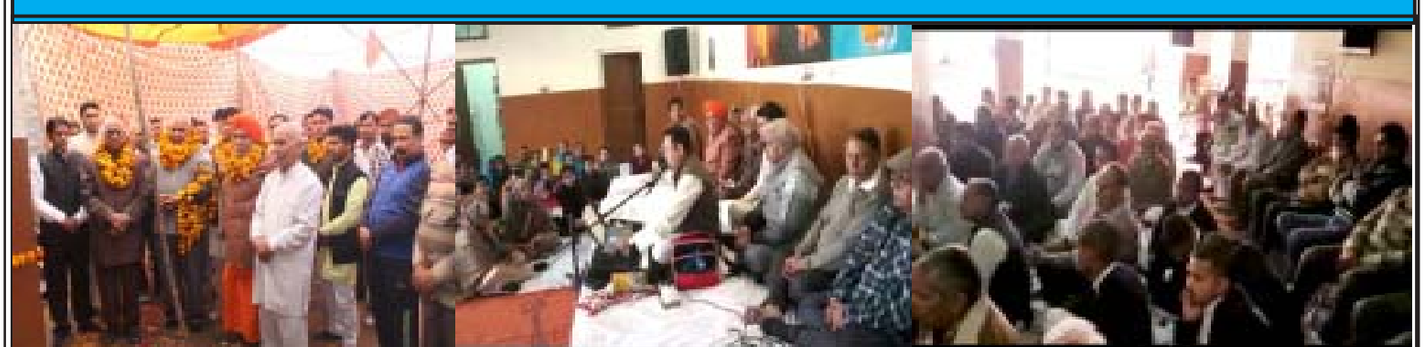

आर्य समाज बस्ती बावा खेल जालन्धर के वार्षिक उत्सव के अवसर ध्वजारोहण करते हुए श्री कमल किशोर आर्य, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, स्वामी सदानन्द जी एवं आर्य समाज के अधिकारी, चित्र दो में भजन प्रस्तुत करते हुए भजनोपदेशक श्री सुरेन्द्र आर्य तथा मंच पर बैठे हुए पं. विजय कुमार शास्त्री, स्वामी सदानन्द अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न, श्री कमल किशोर आर्य, श्री वेद आर्य, श्री सुदेश आर्य सभा मन्त्री तथा चित्र तीन में उपस्थित आर्य जनता।

आर्य समाज बस्ती बावा खेल जालन्धर का वार्षिक उत्सव 8 फरवरी से 10 फरवरी 2019 तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री तथा श्री सुरेश शास्त्री के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री सुरेन्द्र आर्य के भजन होते रहे।

मुख्य कार्यक्रम दिनांक 10 फरवरी 2019 को प्रात: विश्व कल्याण महायज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. मनोहर लाल जी आर्य तथा पं. विजय कुमार शास्त्री जी ने सभी यजमानों से आहुतियां डलवाई तथा यजमान परिवारों की सुख-समृद्धि की कामना करते हुए अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञ के पश्चात सभी ने प्रसाद लिया और प्रात:राश ग्रहण किया। प्रात:राश के पश्चात आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के संरक्षक श्री कमल किशोर आर्य जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों के द्वारा ध्वज गीत गाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य की अध्यक्षता में शुरू हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदाननन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी तथा आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी थे। आर्य समाज बस्ती वाबा खेल जालन्धर के पुरोहित एवं भजनोपदेशक श्री सुरेन्द्र आर्य, स्त्री सभा भार्गव नगर की माताओं तथा बच्चों ने अपने भजनों के माध्यम से वातावरण को सुन्दर बना दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री तथा श्री सुरेश शास्त्री ने अपने प्रवचनों के द्वारा आर्यजनों का मार्गदर्शन किया। स्वमी सदानन्द जी महाराज ने सभी आई हुई संगत को आशीर्वाद दिया और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों को अपनाने की प्रेरणा दी। (शेष पृष्ठ 6 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।